पद १५

(राग: हमीर - ताल: त्रिताल)

दाता जगीं माणिकप्रभु तो एक ।।ध्रु.।। उपासकातें त्या त्या रूपें। इच्छित पुरवी देख।।१।। जीवन एकचि फलिता करितें। भूवरि बीज अनेक।।२।। मनोहर म्हणे एक संत। वदती वेद प्रमुख।।३।।